🤲 सफ़र की दुआ

अरबी:

اللّٰهُ أَكْبَرُ، اللّٰهُ أَكْبَرُ، اللّٰهُ أَكْبَرُ

سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ ۝ وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنقَلِبُونَ ۝

اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ فِي سَفَرِنَا هٰذَا الْبِرَّ وَالتَّقْوَىٰ، وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضَىٰ، اللَّهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هٰذَا، وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَهُ، اللَّهُمَّ أَنْتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ، وَالْخَلِيفَةُ فِي الْأَهْلِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ، وَكَآبَةِ الْمَنْظَرِ، وَسُوءِ الْمُنْقَلَبِ فِي الْمَالِ وَالْأَهْلِ.

हिंदी तर्जुमा:

“पाक है वह ज़ात जिसने इस सवारी को हमारे लिए वश में कर दिया, जबकि हम इसे काबू में करने वाले नहीं थे। और बेशक हमें अपने रब ही की तरफ़ लौटकर जाना है।

ऐ अल्लाह! हम अपने इस सफ़र में तुझसे नेकी, परहेज़गारी और ऐसे अमल का सवाल करते हैं जिससे तू राज़ी हो जाए। ऐ अल्लाह! हमारे इस सफ़र को हमारे लिए आसान कर दे और इसकी दूरी को हमारे लिए समेट दे। ऐ अल्लाह! तू ही सफ़र में हमारा साथी और घरवालों में हमारा निगहबान है। ऐ अल्लाह! मैं सफ़र की तकलीफ़, बुरी हालत देखने और माल व घरवालों में बुरी वापसी से तेरी पनाह मांगता हूँ।”